© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

इक्कीसवीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद

हरीश कुमार यादव
शोध छात्र
राजनीतिविज्ञान विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

वर्तमान समय में आतंकवाद का संकट किसी राज्य अथवा भू–भाग विशेष की परिधि में सीमित नहीं है अपितु अपने वर्तमान स्वरूप में यह पूर्णता वैश्विक हो गया है। किसी भी अन्य वैश्विक संस्था के समान इसकी एक विस्तृत एवं सुव्यवस्थित संरचना है।

11 सितम्बर 2001 का आतंकी हमला इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि किस प्रकार आतंकवाद ने वैश्वीकरण के फलस्वरूप उपलब्ध सुविधाओं का प्रयोग अपनी कार्यप्रणाली को बदलने के लिए किया है। आतंकवाद की यह संरचना पहले की अपेक्षा व्यवस्थित एवं सटीक सूचनातंत्र तथा पेशेवर ढंग से काम करने वाले युवाओं से युक्त है जो कि दुनिया में कहीं भी किसी भी देश में आतंकी हमले को अंजाम दे सकते हैं।

21वीं सदी में आतंकवाद के बदलते स्वरूप के इस विश्लेषण में सबसे पहले जो चीज अध्ययन का विषय है वह है आतंकवादी का स्वरूप।

मुँह पर नकाब लगाये, बड़ी–बड़ी बंदूकें लिए, शोर मचाते हुए लोगों को कत्ल करना आदि यह सब कुछ ऐसे दृश्य हैं जो आतंकवाद की चर्चा के दौरान सहज ही ऑखों के सामने आ जाते हैं किन्तु 21वीं सदी में वैश्वीकरण के इस युग में आतंकवाद ने भी अपने स्वरूप तथा अपनी कार्यपद्धति को बदला है।

21वीं सदी का आतंकवादी अपने चेहरे से कतई यह आभास नहीं देता है। वह आम समाज से दूर किसी वीरान जंगल में नहीं रहता बल्कि वह पूरी तरह से समाज के बीच में एक सामाजिक जीवन जीता है किन्तु मनोवैज्ञानिक स्तर पर वह दोहरी जिन्दगी व्यतीत करता है।

21वीं सदी का आतंकवादी बेहद पढ़ा लिखा, कार्यकुशल व सामाजिक व्यवहार में सामान्य नागरिक की भांति होता है। अहमद उमर सईद शेख, ओसामा बिन लादेन, मोहम्मद अता इत्यादि जैसे आतंकवादी, परंपरागत छवि के उलट अपने समाज में सम्मानित परिवार से सम्बन्धित थे। इन्होंने दुनिया के प्रतिष्ठित कालेजों में शिक्षा पायी थी। किन्तु इसके बावजूद ये शिक्षित युवा आतंकवाद जैसे विकृत एवं घृणित कृत्य में भागीदार बने। इन्हें आतंकवाद का भागीदार बनाने के लिए कौन से कारक जिम्मेदार हैं? तथा वे कौन से तत्व है जिन्होंने इन्हें प्रेरित किया? यह अपने आप में अध्ययन का विषय हैं। आतंकी संगठन अपने संगठन को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने के लिए विशेषरूप से उच्च शिक्षित एवं विशेष योग्यता वाले युवाओं को अपने संगठन से जोड़ने की कवायद कर रहे हैं और इस कार्य के लिए वे सोशल मीडिया के संसाधनों का जमकर प्रयोग कर रहे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से यह अपनी विचारधारा का प्रचार प्रसार भी कर रहे हैं।

कार्य प्रणाली के स्तर पर भी आतंकवाद ने अपने आप को बदला है और अपनी व्यवस्था एवं संरचना को बदलने के लिए इन्होंने वैश्वीकरण के दौर में उपलब्ध सूचना–तकनीक समेत प्रत्येक तकनीक का समुचित प्रयोग किया है। इस दौर में आतंकवाद ने सूचना–तकनीक का व्यापक स्तर पर प्रयोग अपने–आपको विस्तृत एवं सुदृढ़ करने के लिए किया है। दुनिया के अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग आतंकी समूह आधुनिक सूचना तंत्र के माध्यम से एक वैश्विक एकीकृत संरचना का निर्माण कर रहे हैं।

पिछले कुछ समय से आतंकवादी हमलों में एक नया प्रतिरूप देखने को मिल रहा है जोकि वर्तमान में सुरक्षा एजेसियों के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। ऐसे हमलों में शामिल व्यक्ति बेहद साधारण पृष्ठभूमि वाले होते हैं, उनका कोई आपराधिक रिकार्ड नहीं होता है और भीड़ पर गोलीबारी करना, चाकू से हमला करना, ट्रक अथवा गाड़ी द्वारा लोगों को कुचल कर मार देना, इनके द्वारा किए जाने वाले आतंकी कृत्य हैं जोकि पारंपरिक आतंकी कृत्यों से भिन्न हैं। फ्रांस के नीस, लंदन ब्रिज, जर्मनी, स्टाकहोम में हुए कुछ हमलों में यही प्रतिरूप देखने को मिला है।

किसी भी संरचना के सतत् एवं सुचारू संचालन के लिए आवश्यक हैं वित्त की उपलब्धता यह बात पूर्णतः आतंकवाद पर भी लागू होती है। समय के साथ आतंकवाद ने अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए–नए तरीके ईजाद किए हैं। ISIS जैसे आतंकी संगठन जहॉ तेल के संसाधनों पर कब्जा कर उन्हें अपनी वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए प्रयोग कर रहे हैं तो सोमालियाई आतंकी संगठन अपने जल क्षेत्र में आने वाले व्यापारिक जहाजों का अपहरण कर फिरौती के रूप में धन प्राप्त कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त नशा कारोबार, सट्टेबाजी, आदि में धन का निवेश करते हैं जहॉ उन्हें ज्यादा मुनाफा प्राप्त होता है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने मुख्यतः दो कार्य व्यापक स्तर पर किए हैं, **पहला** प्रत्येक स्तर पर यथा राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर दूरियों को कम किया है तथा **दूसरा** नवीन तकनीकों के द्वारा वैश्वीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान की है।

आतंकवाद तेजी से अपना स्वरूप बदल रहा है साथ ही उसकी कार्यप्रणाली एवं कार्यपद्धति बदल रही है। आतंकवादी संगठन जी0पी0एस0 प्रणाली, सैटेलाइट फोन मोबाइल बम, हैकिंग जैसी अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं किन्तु राज्य की सुरक्षा एजेंसियॉ उनके समान्तर कार्य करने में विफल साबित हो रही हैं विशेषकर तृतीय विश्व के देशों में। हमारी सुरक्षा एजेंसियॉ आज भी अध्ययन के परंपरागत साधनों पर निर्भर हैं।

वर्तमान में आतंकवाद के बदलते स्वरूप के विस्तृत अध्ययन विश्लेषण की आवश्यकता है और सबसे ज्यादा आवश्यकता इस बात की है कि आतंकवाद की समस्या और इसका स्वरूप अगर वैश्विक है तो इसका समाधान भी सभी देशों को साथ मिलकर निकालना होगा क्योंकि आतंकवाद अब किसी देश–विशेष की समस्या नहीं है अतः इसके समाधान में एक वैश्विक दृष्टिकोण की नितांत आवश्यकता है।

References

[1]. Biswal Tapan (Ed), International Relations, Macmillan Publishers Ltd., 2010.

[2]. Daily Times – 11 September 2017, By Lal Khan

[3]. The Nation July 22, 2016.

[4]. The New York Times.